Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-5 | June-2014 Available online at www. isrj.net

शेखर एक जीवनी: एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

विनोद कुमार

कला एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा(पंजाब)

सारांश **:-** साहित्य को मानवीय स्वभाव एवं क्रियाकलाप का ही एक व्यापक चित्र माना जाता है और मानवीय स्वभाव एवं क्रियाकलाप का विश्लेषण एक तरह से उसका मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान ही कहा जाए तो इसमें कोई अत्योक्ति न होगी। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि साहित्य भी मानवीय विचारों एवं क्रियाकलापों का मनोवैज्ञानिक अन्वेषण ही है।

प्रस्तावना :

हिन्दी में वैसे तो विशुद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की कोई खास परम्परा नहीं है और अधिकतर उपन्यास स्थूल रूप में सामान्य घटनाओं को ही आधार रूप से ग्रहण करते आए हैं, परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं लिया जा सकता कि हिन्दी के उपन्यास ने मानव मन के अन्तर्मन के संकल्प-विकल्पयुक्त ताने-बाने को समझने और समझाने का कभी प्रयास ही नहीं किया। आधुनिक युग में मनोविज्ञान के बढ़ते हुए प्रभाव से जीवन का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है, तो जीवन का दर्पण एवं प्रेरणा अर्थात् साहित्य इस प्रभाव से कैसे बचा रह सकता। हिन्दी कथाकारो विशेषत: उपन्यासकारों ने अपनी कलम से मानव-जीवन के जो चित्र उकेरे हैं, वे स्पष्ट दर्शाते हैं कि जीवन की जटिलताओं के साथ-साथ हिन्दी उपन्यास ने भी मानवीय संघातों-विघातों के द्वन्द्वों को अपनी कलम से अंकित करने का प्रयास किया है।

मनोविश्लेषणवादियों के आगमन से पूर्व हमारे विचार मानवीय-क्रिया कलापों को लेकर कुछ और थे, लेकिन अब यह समझ में आने लगा था कि बाल्यकाल में व्यक्ति को अनुकूल परिस्थितियाँ न मिलें तो उसका व्यक्तित्व-निर्माण अवश्य प्रभावित होता है। मनोविज्ञान यह मानता है कि एक बालक का मन एक साथ बहुत सी उलझनों, बहुत सी मुश्किलों और बहुत से प्रश्नों के समाधान एकदम चाहता है और जब उसे सन्तुष्टिजनक उत्तर प्राप्त नहीं हो जाते तो वह व्यग्र हो उठता है। यही व्यग्रता और अनसुलझे सवाल उसके चरित्र को शेप देते हैं।

"वास्तव में बालक एक Ploymorphous perverse है। अपनी मान्यताओं की जाँच इन लोगों (मनोवैज्ञानिकों) ने बालकों के व्यवहार और क्रिया-कलापों के सूक्ष्म और व्यवस्थित अध्ययन के सहारे की है और इन्होंने इन्हें सत्य पाया है। कहना तो यही ठीक होगा कि इन लोगों ने बालकों के जीवन तथा उनके व्यवहारिक कृतियों के अध्ययन के पश्चात् ही बाल-मनोविज्ञान सम्बन्धी सिद्धान्तों की स्थापना की है।"(१)

हिन्दी के आधुनिक युग के साहित्यकार अज्ञेय ने अपनी रचनाओं में मनोविज्ञान के बिन्दुओं को बखूबी संचित किया है, जो उनके साहित्य की प्रेरणा और पृष्ठभूमि के साथ-साथ प्राण भी हैं। उनका शेखर एक जीवनी तो हिन्दी उपन्यासों में एक अपवाद स्वरूप आपूर्ति बनकर आया है, जिसने बाल मनोविज्ञान की बहुत सी पर्तों को उघाड़ने का सफल उपक्रम किया है। बहुत बार यह प्रश्न उठाया गया है कि शेखर का व्यक्तित्व फ्रिटिज की केस हिस्ट्री की छाया से बना लगता है। लेकिन यह समझना भी आवश्यक है कि शेखर कोई छाया नहीं बल्कि उसका व्यक्तित्व अपनी ही परिस्थितियों का योग है, जो स्वाभाविक और मौलिक है।

अज्ञेय का 'शेखर एक जीवनी' हिन्दी का प्रथम उपन्यास है जिसमें शिशु-मानस के सपनों को, फ्रायड के शब्दों में (Pleasure Principle) आनन्द-प्रधान जीवन की झाकियोँ को, उसके कौतुहल और जिज्ञासाओं को तथा उसकी स्वाभाविक प्रवृतियों पर समाज तथा माता-पिता के व्यवहार अथवा यूँ कहिए कि Reality Principle के सम्पर्क से उत्पन्न दमन को, मानसिक ग्रन्थियों को तथा उसके जीवन व्यापी प्रभाव को कथाक्षेत्र में लाने का प्रयास किया गया है।

उपन्यास के प्रथम भाग में एक बालक के मन का विश्लेषण किया गया है, जो बहुत ही स्वाभाविक गति और यति के साथ स्पष्टीकरण करता चला जाता है कि शिशु मन की उलझनों का कितना महत्व हो, जिन्हें अक्सर हम लोग अनदेखा कर देते हैं। लेखक ने बालक मन की उस विचार-प्रक्रिया को पकड़ने का प्रयास किया है, जो बाद में चलकर उसके स्वभाव का अंग बन जाती है। फांसी लगने से पूर्व की रात मानो शेखर को एक विशुद्ध दार्शनिक बना देती है और वह अपने जीवन को स्मृति-पटल पर पुन: देखता हुआ एक नई तरह की अनुभूति प्राप्त करता है।

"स्मृतियां तो हैं, पर मुझे याद आते हैं वे भाव जो मैने अनुभव किये हैं, वह विशेषत: मन:स्थिति जिसे लेकर मैं किसी दृश्य में भागी हुआ था और ये चित्र मैं खींचता हूँ, ये उन्हीं भावों, उन्हीं मन स्थितियों को लेकर उन पर निर्मित छाया मात्र है।" (२)

मन के कोने में दबी स्मृतियां जिस तरह सम्मोहन की अवस्था में या चित्त विश्लेषक की सूचनाओं के द्वारा अथवा किसी विशेष अवसर पर हर मुक्त आसंग पद्धति के सहारे चेतना में लाई जा सकती है उसी तरह मृत्यु की सम्मोहिनी शक्ति ने शेखर के अतीत जीवन को, विशेषत: बाल्यकालीन स्मृतियों को उभारकर सामने रख दिया है। अनेक मनोविकारग्रस्त रोगियों के अध्ययन तथा अनेक प्रयोग एवं परीक्षण निरीक्षण के बाद फ्रायड इस निर्णय पर पहुँचे कि हम सब विकारों का मूल जीवन के प्रारम्भिक एक दो वर्षों के भावात्मक जीवन तथा उसकी दमित प्रवृतियों में है। यदि किसी तरह प्रारम्भिक बाल स्मृतियों को जागृत किया जा सके और उस समय के भावों को जीवन में अपनाया जा सके अर्थात् फिर से बालक बना जा सके तो मनोविकार सदा सदा के लिए दूर किए जा सकते हैं। पर यह असम्भव है कि पूर्ण रूपेण उस प्रारम्भिक अवस्था को स्मृति-पटल पर लाया जा सके। सच्चाई यह लगती है कि हम पूर्व स्मृतियों से बहुत ही विशिष्ट क्षणों, घटनाओं आदि को ही रख पातें हैं। फ्रायड का कथन है कि यह कोई जरूरी नहीं कि समग्र संचित स्मृतियों को सम्भाला जाए, बल्कि हमारा उद्देश्य उस स्थिति को पकड़ना है, जो इन सबका आधारभूत कारण है।

अज्ञेय भी शेखर के लिए यही कहते हैं कि भले ही अतीत जीवन अथवा शैशवास्था के सारे घटना-चित्रों को वह साकार न कर सका हो पर उसमें इनकी मौलिक मानसिक भाव स्थितियाँ तो आ ही जाती हैं। मृत्यु और ईश्वर के बारे में शेखर अपनी जिज्ञासाओं की तृप्ति चाहता है।

शेखर एक जीवनी के प्रथम भाग के प्रथम और द्वितीय खण्ड में शेखर ने युद्ध में मारे जाने वालों के बारे में सुना जो उसके कोमल और पावन हृदय को आहत कर जाती हैं और प्रश्न के जवाब में उसके सामने अर्गला आती है। मृत्यु के प्रति भी उसकी जिज्ञासा जागती है और वह स्वयं भी एक बार डूबते-डूबते बचता है तो उसका मन मृत्यु के बारे में जानने को उत्सुक हो जाता है। वह अपनी बहिन सरस्वती से पूछता है-

"मरते कैसे हैं?" / "मर जाते हैं और क्या?....
सांस बंद हो जाती है, जब जान निकल जाती है।" / "जान आती कहाँ से है?"
"ईश्वर से।" / "जाती कहाँ है?"
"ईश्वर के पास।" / "ईश्वर ले लेता है।"
" हाँ"
शेखर ने सन्देह से कहा। थोड़ी देर बाद उसने फिर पूछा " इतनी सब जानें ईश्वर के पास गई होंगी।" / हाँ"
"जर्मनी की भी।" / "हाँ"
" सब शरीर भी ईश्वर बनाता है।" / "हाँ"
"सब कुछ ईश्वर कर सकता है।" / "हाँ"
"तब लड़ाई भी ईश्वर ने कराई होगी।" / "हाँ"(३)

पंजाब में दंगा-फसाद की खबरे सुनकर भी शेखर के सामने अर्गला आकर खड़ी हो जाती है। स्टेशन जला दिया गया। गोली चली। फौजें आ रही हैं। पिता से शेखर पूछता है ,

"पंजाब में भी लड़ाई होगी।"
पिता ने कहा "ऐसी बात नहीं करते।"
"अभी पहले से तो छुट्टी मिल ले।"
"अभी चीजे कितनी मंहगी है।"
"ईश्वर की मर्जी हुई तो और होगी ही..."
शेखर फिर पूछता है कि यदि वायसराय मंहगाई कम नहीं कर सकता तो क्या ईश्वर कर सकता है?
"हाँ कर सकता है।"
"मंहगाई भी उसने ही की है।"
"हाँ अब भाग जाओ, अपनी पढ़ाई नहीं करनी।"

शेखर के मूँह पर जो प्रश्न था वह भी उसके साथ ही भागा। क्यो? (४)

अक्सर बच्चे घर में नवजात शिशु को लेकर अनेक सवाल करते हैं और प्राय: उन्हें उनके जवाब मिलते नहीं और यही शेखर के साथ भी होता है। अपने नये जन्में भाई को देखकर शेखर ने अपनी माँ से पूछा कि यह कहाँ से आया है तो माँ जवाब देती है कि दाई ने ला कर दिया है। वह दाई से पूछता है कि वह इतना छोटा क्यों लाई है? कुछ और बड़ा लाती। तब वह कहती है कि मैं नहीं लाई वह तो डॉक्टर लाया था। वही अपने बेग में रख कर लाया था, उसके बेग में उससे बड़ा आया नहीं। कुछ दिन बाद वह अण्डों से बच्चे निकलता देखता है। उसके मन में शंका होती है। आजमाने के लिए माँ के पास जाकर पूछा-

"माँ डॉक्टर चिड़ियों के पास भी जाते हैं।"
माँ ने कहा "नहीं तो, क्यों?"
"तब चिड़ियों के बच्चे कहाँ से आते हैं?"
और फिर बहिन से पूछता है-
" ईश्वर अण्डे कैसे देता है।"
"बारिश के साथ बरसा देता होगा।" (५)

बाल सुलभ जिज्ञासा का एक अन्य संकेत कथा के प्रथम भाग में वहाँ मिलता है, जहाँ शेखर शिशु के आकार ग्रहण करने की बात आती है। इसकी चर्चा के प्रसंग में अहन्ता भय और सेक्स भाव की सहज प्रवृति व्यंजित की गई है। प्रवेश नामक खण्ड में मन के दो खण्डों की चर्चा आई है, जो परस्पर युद्ध की प्रक्रिया में हैं और चेतना पर राजस्व पाने के लिए लड़ रहे हैं। "ऐसा भी होता है कि कभी किसी बात का प्रभाव बढ़ जाता है और कभी किसी और का और इसके फलस्वरूप मेरे कार्यों में प्रतिकूलता, एक असम्बद्धता आ जाती है जिसे मुझे बाह्य रूप में समझने वाले नहीं समझ सकते किन्तु मेरे व्यक्तित्व में आकार एकीभूत हो जाती है, हल हो जाती है। कभी ऐसा भी होता है कि कभी किसी खण्ड की प्रधानता नहीं होती तब वे मन क्षेत्र के विभिन्न केन्द्रों पर अधिकार करते हैं और यदि हाथ एक के नियन्त्रण में होते हैं तो मुख दूसरे के या चेतना एक के तो शारीरिक परिचालन दूसरे के। तब मैं ऐसा ही दीखता हूँगा जैसी कोई मशीन जिसके पुर्जे उलझ गए हों किन्तु जिसकी गति बन्द न हुई हो।"(६)

'शेखर: एक जीवनी' के केन्द्र में शेखर है जिसके जीवन की कथा इस उपन्यास में लिखी है। शेखर के ही इर्द-गिर्द घुमती परिस्थितियों तथा उसका शेखर पर पड़ते प्रभाव को एवं इन्हीं के मध्य शेखर के उभरते व्यक्तित्व को ही अज्ञेय जी ने उपन्यास में अभिव्यक्त किया गया है। शेखर क्या सोचता है, कैसे परिस्थितियों का सामना करते वक्त उसके मन से विद्रोह की भावना उठती है या किसी के प्रति वह झुकता है सबकुछ इसमें व्यक्त हुआ है। सबसे अधिक अपने आपको समझने एवं उसी में खोने की बात भी इसमें स्पष्ट दिखाई देती है।

शेखर केन्द्रीय पात्र है परन्तु उसके साथ-साथ अन्य पात्रों को भी लिया गया है एवं उनकी भी भूमिका दिखाई गयी है ताकि शेखर का व्यक्तित्व स्पष्ट हो जाए। इस समस्त पक्षों को उजागर करने के लिए अज्ञेय जी कभी शेखर के मुख से तो कभी अपनी तरफ से, संवाद के माध्यम से भी शेखर के विचारों, चिन्ताधारा, अंतस्चेतना में होती हलचल; सबको सरल भाषा में ही प्रस्तुत किया है, परन्तु यह मनोवैज्ञानिक उपन्यास है अतः व्यक्ति का मनोविज्ञान सब समय स्थिर या एक ही जैसा रहे ऐसा नहीं होता बल्कि परिस्थिति अनुसार बदलती भी है। इसी कारण इस उपन्यास की भाषा भी औपन्यासिक मोड़ों पर बदलती जाती है। भाषा के बदलाव के साथ-साथ हमें शेखर के विचार एवं बदलाव का भी आभास होता जाता है जिससे पाठक समाज कभी शेखर से जुड़ता है तो कभी उसके संवाद या हरकत से चकित भी होता है।

कुल मिलाकर पूरे उपन्यास से शेखर के जीवन के विविध आयामों के दर्शन हो जाते है। और इसके लिए इस उपन्यास की भाषा को भी सराहा जा सकता है जिसके कारण यह उपन्यास पाठक के मन में स्थान बना गया है। आमतौर पर कहा जाता है कि किसी के मनोविज्ञान को समझना इतना आसान नहीं होता है, उसी तरह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास को भी पढ़कर उसके धरातल तक जाकर उसे समझना भी उतना आसान नहीं है। ऐसा अनुभव होता है जैसे कोई मनोविज्ञान का जानकार मन की तन्त्रिकाओं के संरचनात्मक ढांचे की गवेषणा कर रहा हो। सीधे-सीधे कहें तो कह सकते हैं कि एक विश्लेषणवादी मनोवैज्ञानिक के कंठ से Neurosis सम्बद्ध तथ्य निसृत हो रहे हों।

अज्ञेय के इस उपन्यास को देखकर लगता है कि वे निश्चित एक मनोवैज्ञानिक हैं जो बाल-जीवन की उलझनों में भटके मन के तन्तुओं को सुलझाने का प्रयास करते हैं और कहीं उसमें सफलता भी पाते हैं।

सन्दर्भ:

१. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान,डॉ.देवराज उपाध्याय,पृ.१५७
२. शेखर एक जीवनी,पृ.९८
३. शेखर एक जीवनी,पृ.९०
४. शेखर एक जीवनी, पृ.९४
५. शेखर एक जीवनी,पृ.१०७
६. शेखर एक जीवनी,पृ.११

विनोद कुमार
कला एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा(पंजाब)